दुग्ध विषयक धर्मशास्त्रीय निर्देशन

१. व्यानेके दिनसे जिसके दस दिन न बीते हों-ऐसी गायका दूध तथा ऊँटनी, एक खुरवाले पशु (घोड़ी आदि), भेड़, गर्भिणी, जंगली पशु, और मरे हुए बछड़ेवाली गायका दूध नहीं पीना चाहिये-

अनिर्दशाया गोः क्षीरमौष्ट्रमैकशफं तथा।
आविकं सन्धिनीक्षीरं विवत्सायाश्च गोः पयः ॥

(मनुस्मृति ५।८)

विवत्साऽन्यवत्सयोश्च।

(बौधायनधर्मसूत्र १।५।१२।१०)

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान
दूरभाष: 9044016661

सन्धिन्यनिर्दशाऽवत्सगोः पयः परिवर्जयेत्।
औष्ट्रमैक शफंस्त्रैणमारण्यकमथाविकम् ॥

(याज्ञवल्क्यस्मृति१।१७०)

आविकमौष्टिकमैकशफम् ॥

(बौधायनधर्मसूत्र १।५।१२।११)

गोश्च क्षीर मनिर्दशायाः सूतके चाजामहि ष्योश्च
नित्यमाविकमपेयमौष्ट्रमैकशफञ्च
स्यन्दिनीयमसूसन्धिनीनाञ्च याश्च व्यपेतवत्साः'

(गौतमस्मृति १७)

उष्ट्रीक्षीरमृगीक्षीरसन्धिनीक्षीरवमसूक्षीराणीति ॥

(आपस्तम्बधर्मसूत्र १।५।१७। २३)

विवत्सायाश्च गोः क्षीरमौष्ट्रं वानिर्दशं तथा।
आविकं सन्धिनीक्षीरमपेयं मनुरब्रवीत् ॥

(कूर्मपुराण, उ ० १७। ३०)

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान
दूरभाष: 9044016661

विवत्सायाश्च गोः क्षीरं मेषस्यानिर्दशस्य च ॥
आविकं .....

(पद्मपुराण, स्वर्ग०५६।३०-३१)

.....................अवत्सागोपयस्त्यजेत्॥
पय ऐकशफं हेयं तथाक्रामेलकाविकम्।

(स्कन्दपुराण, काशी० पू० ४०।१०-११)

अभोज्यं चाप्यपेयं चधेनोर्दुग्धमनिर्दशम् ॥

(महाभारत, शान्ति०३६।२६)

धेनोश्चाऽनिर्दशावाः ॥

(आपस्तम्बधर्मसूत्र १।५।१७।२४)

अनिर्दशाहसन्धिनीक्षीरमपेयम्।

(बौधायनधर्मसूत्र १।५।१२।९)

गोश्च शीरमनिर्दशाबाः सूतके। अजामहिष्योश्च।
नित्यमाविकमपेयमौष्ट्रमैकशफंच।स्वन्दिनीयमसूस

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान
दूरभाष: 9044016661

न्धिनीनां चाविवत्सायाश्च।

(गौतमधर्मसूत्र २।८।२२-२६)

२. गाय, भैंस और बकरीके दूधके सिवाय अन्य पशुओंके दूधका त्याग करना चाहिये। इनके भी ब्यानेके दस दिनके अन्दरका दूध काममें नहीं लेना चाहिये-

गवां च महिषीणां च वर्जयित्वा तथाप्यजाम्।
सर्वक्षीराणि वाणि तासां चैवाप्यन्निर्दशम्।

(अग्निपुराण १६८।१ ९ -२०)

३. जिस गायको ब्याये हुए दस दिन भी न हुए हों, उसका दूध तथा ऊँटनी और भेड़का दूध पी जानेपर चान्द्रायण-व्रत करना चाहिये-

अनिर्दशाया गोः क्षीरमौष्ट्रमाविकमेव च।
मृतसूतकयोश्चान्नं भुक्त्वा चान्द्रायणं चरेत् ॥

(महाभारत, आश्व० ९२)

४. ब्राह्मणोंको भैंसका दूध, दही, घी, स्वस्तिक और मक्खन नहीं खाना चाहिये-

अभक्ष्यं महिषीणां च दुग्धं दधि घृतं तथा।
स्वस्तिकं च तथा तत्र विप्राणां नवनीतकम् ॥

(ब्रह्मवैवर्तपुराण, श्रीकृष्ण० ८५।२०)

५. जो मनुष्य छोटे बछड़ेवाली गौओंका दूध दुहकर पी जाते हैं, उनकी सन्तान नष्ट हो जाती है तथा उनके वंशका क्षय हो जाता है-

क्षीरं तु बालवत्सानां ये पिबन्तीह मानवाः ॥
न तेषां क्षीरपाः केचिज्जायन्ते कुलवर्धनाः।
प्रजाक्षयेण युज्यन्ते कुलवंशक्षयेणच ॥

(महाभारत, अनु ०१२५/ ६६-६७)

६. जिस दूधमेंसे चिकनाई निकाल दी हो, जो दूध फट गया हो और जो बासी हो, वह दूध नहीं पीना चाहिये-

न भुञ्जीतोद्धृतस्नेहं नष्टं पर्युषितं पयः।

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान
दूरभाष: 9044016661

(सुश्रुतसंहिता, चिकित्सा०२४।९९)

७. लक्ष्मी चाहनेवाला मनुष्य भोजन और दूधको बिना ढके न छोड़े-

'भक्ष्यमासीदनावृतम्'

(महाभारत, शान्ति ०२२८।५८)

अपावृतं पयोऽतिष्ठदुच्छिष्टाश्वास्पृशन्घृतम् ॥

(महाभारत, शान्ति ०२२८१५ ९)

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान
दूरभाष: 9044016661